B. A. -I (HISTORY) HONOURS, 2020.

NOTES PREPARED BY →

DR. MANITA KUMARI YADAV
ASSISTANT PROFESSOR
DEPARTMENT OF HISTORY
VAISHALI MAHILA COLLEGE
HAJIPUR, BIHAR UNIVERSITY
MUZAFFARPUR.

Scanned with CamScanner

भारत में तुर्क आक्रमण की सफलता के कारण

(i) सामंती प्रथा तथा सेना के लिए भारतीय राजाओं का सामंतों पर निर्भर होना

(ii) व्यक्तिगत मतभेद एवं आपसी विवाद के कारण तथा प्रत्येक राजवंश एक - दूसरे के शत्रु थे

(iii) राजनीतिक अनेकता अर्थात् भारतीय राजाओं का अलग - अलग कबीला एवं जाति में बँटा होना

(iv) वर्ण - व्यवस्था पर आधारित समाज तथा निम्न वर्णों के साथ अनुचित व्यवहार

(v) सीमांत क्षेत्र की सुरक्षा का कोई प्रयास न करना

(vi) भारतीयों के तुलना में तुर्कों की रण - पद्धति का उत्तम होना

(vii) भारतीयों के पास घोड़ों की तुलना में हाथी की संख्या अधिक थी

(viii) भारतीयों के द्वारा समुद्र के पार को अपवित्र मानना

(ix) भारतीयों के विपरीत तुर्क घोड़े के नाल का प्रयोग करते थे

(x) भारतीयों के तुलना में तुर्क धनुष विद्या

Scanned with CamScanner

के क्षेत्र में अधिक निपुण थे तथा तुर्कों के द्वारा एक विशेष प्रकार का आग फेंकने वाले धनुष का प्रयोग किया जाता था, जिसे "नावक" के नाम से जाना जाता था।

(xi) भारतीय शासक युद्ध में हार को व्यक्तिगत अपमान मानते थे, इसके विपरित तुर्क शासक युद्ध में पराधिक से ~~हत~~ ~~हतो~~ हतोत्साहित न होकर हार के कारण को समझने तथा उसके निदान का प्रयास करते थे।

(xii) भारतीय शासकों की पृथकतावादी नीति क्योंकि भारतीय समुद्र यात्री के विरोधी थे तथा किसी भी रूप में विदेशी संबंध को मान्यता नहीं देते थे।

(xiii) भारतीय सेना का निर्माण वर्ण - व्यवस्था तथा रक्त शुद्धता पर आधारित था जबकि तुर्क - सेना योग्यता पर आधारित थी।

(xiv) तुर्क मरने पर शहीद तथा जीतने पर गाजी की भावना से ओत - प्रोत थे जबकि भारतीयों के समक्ष इस तरह का कोई आदर्श नहीं था।